बाल भारती पब्लिक स्कूल, पीतम पुरा, दिल्ली।

साप्ताहिक योजना

सप्ताह - 21 -24 दिसंबर

कालांश - 2

कक्षा - नवमी

विषय - संस्कृत

उपविषय - पाठ -पर्यावरणम

शिक्षण अधिगम -छात्र पाठ पढ़ने के पश्चात् पाठ पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे

सहायक सामग्री -https://youtu.be/e-zUvOM-uhY

https://youtu.be/c-eVgDjgIiU
https://youtu.be/kL2bjZlH5I0
https://youtu.be/JEYgAxdA9RY

पाठ - ॥ पर्यावरणम् (पर्यावरण)

प्रकृति सब प्राणियों की रक्षा के लिए प्रयत्न करती है। यह अनेक प्रकार से सबको पुष्ट करती है तथा सुख साधनों से तृप्त करती है। पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश ये इसके प्रमुख तत्त्व हैं। ये ही मिलकर या अलग - अलग रहकर हमारे पर्यावरण को बनाते हैं। संसार जिसके द्वारा सब ओर से आच्छादित (ढका) किया जाता है, वह पर्यावरण कहलाता है। जिस प्रकार अजन्मा शिशु माता के गर्भ में सुरक्षित रहता है, उसी प्रकार मनुष्य पर्यावरण की कोख में। शुद्ध तथा प्रदूषण से रहित पर्यावरण हमें सांसारिक जीवन - सुख, अच्छे विचार, अच्छे संकल्प तथा मांगलिक सामग्री देता है। प्रकृति के क्रोधों से व्याकुल मनुष्य क्या कर सकता है? बाढ़, अग्निभय, भूकंपों, आँधी - तूफानों तथा उल्का आदि के गिरने से दुखी मानव का कहाँ कल्याण है? अर्थात् कहीं नहीं।

इसलिए हमें प्रकृति की रक्षा करनी चाहिए और उससे पर्यावरण सुरक्षित हो जाएगा। प्राचीनकाल में जनता का कल्याण चाहने वाले ऋषि वन में रहते थे क्योंकि वन में ही सुरक्षित पर्यावरण प्राप्त होता था। अनेक प्रकार के पक्षी अपने मधुर कूजन से वहाँ कानों को अमृत प्रदान करते हैं।

नदियाँ तथा पर्वतीय झरने अमृत के समान स्वादिष्ट और पवित्र जल देते हैं। पेड़ तथा लताएँ फल, फूल तथा ईंधन (जलाने की) की लकड़ी बहुत मात्रा में देते हैं, वन की शीतल, मंद तथा सुगंधित वायु औषधि के समान प्राण वायु बाँटते हैं।

किन्तु स्वार्थ में अंधा हुआ मनुष्य उसी पर्यावरण को आज नष्ट कर रहा है। थोड़े से लाभ के लिए लोग बहुमूल्य

आदि जलचरों का क्षणभर में ही नाश हो जाता है। नदियों का पानी भी सर्वथा न पीने योग्य हो जाता है। वन के पेड़ व्यापार बढ़ाने के लिए अंधाधुंध काटे जाते हैं, जिससे अवृष्टि (वर्षा का न होना) में वृद्धि होती है तथा वन के पशु असहाय होकर गाँवों में उपद्रव उत्पन्न करते हैं। पेड़ों के कट जाने से शुद्ध वायु भी दुर्लभ हो गई है। इस प्रकार स्वार्थ में अंधे मनुष्यों के द्वारा विकारयुक्त प्रकृति ही उनकी विनाशिनी हो गई है। पर्यावरण में विकार आ जाने से विभिन्न रोग तथा भयंकर समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं, इसलिए अब सब कुछ चिंता-युक्त प्रतीत हो रहा है।

'रक्षा किया गया धर्म रक्षा करता है', ये ऋषियों के वचन हैं। पर्यावरण की रक्षा करना भी धर्म का ही अंग है - ऐसा ऋषियों ने प्रतिपादित किया है इसलिए बावड़ी, कुएँ, तालाब आदि बनवाना, मंदिर, विश्रामगृह आदि की स्थापना धर्मसिद्धि के साधन के रूप में ही माने गए हैं। कुत्ते, सूअर, साँप, नेवले आदि स्थलचरों तथा मछली, कछुए, मगरमच्छ आदि जलचरों की भी रक्षा करनी चाहिए, क्योंकि ये पृथ्वी तथा जल की मलिनता को दूर करने वाले हैं। प्रकृति की रक्षा से ही संसार की रक्षा हो सकती है। इसमें संदेह नहीं है।

— x — x

पाठ - 11 पर्यावरणम्

प्रश्न 1. अधोलिखितान् गद्यांशान् पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत -

(1)

प्रकृतिः समेषां प्राणिनां संरक्षणाय यतते। इयं सर्वान् पुष्णाति विविधैः प्रकारैः, तर्पयति च सुखसाधनैः। पृथिवी, जलं, तेजो, वायुः, आकाशश्चास्याः प्रमुखानि तत्त्वानि। तान्येव मिलित्वा पृथक्तया वाऽस्माकं पर्यावरणं रचयन्ति। आव्रियते परितः समन्तात् लोकोऽनेनेति पर्यावरणम्। यथाऽजातशिशुः मातृगर्भे सुरक्षितस्तिष्ठति तथैव मानवः पर्यावरणकुक्षौ। परिष्कृतं प्रदूषणरहितं च पर्यावरणमस्मभ्यं सांसारिकं जीवनसुखं, सद्विचारं, सत्यसङ्कल्पं माङ्गलिकसामग्रीञ्च प्रददाति। प्रकृतिकोपैः आतङ्कितो जनः किं कर्तुं प्रभवति? जलप्लावनैः, अग्निभयैः, भूकम्पैः वात्याचक्रैः, उल्कापातादिभिश्च सन्तप्तस्य मानवस्य क्व मङ्गलम्?

I एकपदेन उत्तरत -

(i) प्रकृतिः केषाम् संरक्षणाय यतते? ____________

(ii) का विविधैः प्रकारैः सर्वान् पुष्णाति तर्पयति च? ____________

II पूर्णवाक्येन उत्तरत -

(i) प्रकृतिः कथं रक्षणं करोति?

____

____

(ii) का विविधैः प्रकारैः सर्वान् पुष्णाति तर्पयति च?

____

III भाषिक कार्यम् -

(i) 'इयं सर्वान् पुष्णाति' अत्र इयं पदं कस्मै प्रयुक्तम्?
(i) यतते (ii) पुष्णाति (iii) प्रकृत्यै (iv) तर्पयति

(ii) 'शुद्धम्' इति पदस्य पर्यायपदं गद्यांशे किम् प्रयुक्तम्?
(i) सद्विचारं (ii) परिष्कृतम् (iii) सुखम् (iv) संकल्पम्

(iii) 'प्रददाति' इति क्रियापदस्य कर्तृपदं किम्?
(i) परिष्कृतम् (ii) प्रदूषणरहितम् (iii) पर्यावरणम् (iv) सांसारिकं

(iv) 'कुविचारम्' इति पदस्य विलोमपदं गद्यांशे किम्?
(i) सुखम् (ii) दुखम् (iii) सद्विचारम् (iv) सांसारिकम्

(२) अतएव प्रकृतिरस्माभिः रक्षणीया। तेन च पर्यावरणं रक्षितं भविष्यति। प्राचीनकाले लोकमङ्गलाशंसिन ऋषयो वने निवसन्ति स्म। यतो हि वने एव सुरक्षितं पर्यावरणमुपलभ्यते स्म। विविधा विहगाः कलकूजितैस्तत्र श्रोत्ररसायनं ददति।

सरितो गिरिनिर्झराश्च अमृतस्वादु निर्मलं जलं प्रयच्छन्ति। वृक्षा लताश्च फलानि पुष्पाणि इन्धनकाष्ठानि च बाहुल्येन समुपहरन्ति। शीतलमन्दसुगन्धवनपवना औषधकल्पं प्राणवायुं वितरन्ति।

I एकपदेन उत्तरत –
(i) प्रकृतिः केन रक्षणीया? _____
(ii) के श्रोत्ररसायनं ददति? _____

II पूर्णवाक्येन उत्तरत →
(i) प्राचीनकाले कीदृशाः ऋषयः वने निवसन्ति स्म?

(ii) प्राणवायुं के वितरन्ति?

III भाषिक कार्यम् –
(i) 'आधुनिककाले' इति पदस्य विपर्ययपदं किम्?
(i) प्राचीनकालस्य (ii) प्राचीनकालम् (iii) प्राचीनकाले
(ii) 'विविधाः विहगाः' अत्र विशेषणपदं किम्?
(i) विविधाः (ii) विहगाः (iii) विविधः (iv) विहगः
(iii) 'अस्माभिः' पदं कस्मै प्रयुक्तम्?
(i) जन्तवे (ii) ~~पक्षिभ्यः~~ पशुभ्यः (iii) खगेभ्यः (iv) जनेभ्यः
(iv) 'सरिता' इति पदस्य क्रियापदं किम्?
(i) गिरिनिर्झरः (ii) जलम् (iii) अमृतस्वादु (iv) प्रयच्छति

३. परन्तु स्वार्थान्धो मानवस्तदेव पर्यावरणमद्य नाशयति। स्वल्पलाभाय जना बहुमूल्यानि वस्तूनि नाशयन्ति। यन्त्रागाराणां विषाक्तं जलं नद्यां निपात्यते येन मत्स्यादीनां जलचराणां च क्षणेनैव नाशो जायते। नदीजलमपि तत्सर्वथाऽपेयं जायते। वनवृक्षा निर्विवेकं छिद्यन्ते व्यापारवर्धनाय, येन अवृष्टिः प्रवर्धते, वनपशवश्च शरणरहिता ग्रामेषु उपद्रवं विदधति। शुद्धवायुरपि वृक्षकर्तनात्

I एकपदेन उत्तरत -

(i) कीदृशः मानवः अद्य पर्यावरणं नाशयति?

(ii) कस्याः जलम् सर्वथा अपेयं जायते?

II पूर्णवाक्येन उत्तरत -

(i) वृक्षकर्तनात् कीदृशम् संकटापन्नो जातः?

(ii) यन्त्रागाराणां जलं किम् करोति?

III भाषिक कार्यम् -

(i) 'बहुलाभाय' अस्य पदस्य विपर्ययपदं किम् प्रयुक्तम्?
(i) स्वल्पलाभाय (ii) स्वल्पलाभम् (iii) स्वल्पम् (iv) लाभम्

(ii) 'सञ्जाता' इति क्रियापदस्य कर्ता कः?
(i) विनाशकर्त्री (ii) प्रकृतिः (iii) प्रकृतिरेव (iv) मानवे

(iii) 'विविधाः रोगाः' अत्र विशेष्यपदं किम्?
(i) रोगाः (ii) विविधाः (iii) विविधरोगाः (iv) रोगम्

(iv) 'येन' पदं कस्मै प्रयुक्तम्?
(i) विषाक्तजलम् (ii) विषाक्तजल (iii) विषाक्तजलाय

धर्मो रक्षति रक्षितः इत्यार्षवचनम्। पर्यावरणरक्षणमपि धर्मस्यैवाङ्गमिति ऋषयः प्रतिपादितवन्तः। तत एव वापीकूपतडागादिनिर्माणं देवायतननिश्रामगृहादिस्थापनञ्च धर्मसिद्धेः स्रोतोरूपेणाङ्गीकृतम्। कुक्कुरसूकरसर्पनकुलादिस्थलचरा, मत्स्यकच्छपमकरप्रभृतयो जलचराश्चापि रक्षणीयाः, यतस्ते स्थलमलापनोदिनो जलमलापहारिणश्च। प्रकृतिरक्षयैव सम्भवति लोकरक्षेति न संशयः।

I एकपदेन उत्तरत - केषां

(i) 'धर्मो रक्षति रक्षितः' इति कीदृशं वचनम्?

(ii) पर्यावरणरक्षणं कस्य अंगम् इति?

II पूर्णवाक्येन उत्तरत -

(i) 'आर्षवचनम्' किम्?

II भाषिक कार्यम् →

(i) 'प्रतिपादितवन्तः' इति क्रियापदस्य कर्तृपदं किम्?
(i) धर्मस्य (ii) ऋषयः (iii) अंगम् (iv) पर्यावरणम्

(ii) 'देवालयः' इत्यर्थे अत्र किम् पदम् प्रयुक्तम्?
(i) विश्रामगृहम् (ii) देवायतनम् (iii) तडागः (iv) कूपः

(iii) अत्र 'लोकरक्षा' इति कर्तृपदस्य क्रियापदं किम्?
(i) संशयः (ii) रक्षया (iii) संभवति (iv) इति

(iv) अनुच्छेदे 'स्थलचराः' इति पदस्य विपर्ययपदं किम्?
(i) जलचराः (ii) वायुचराः (iii) नभचराः (iv) अग्निचराः

प्रश्न 2 प्रश्ननिर्माणं कुरुत →
(i) 'प्रकृतिः' प्राणिनाम् संरक्षति। ______
(ii) पञ्चतत्वानि मिलित्वा पर्यावरणं रचयन्ति। ______
(iii) 'परिष्कृतम्' पर्यावरणं अस्मभ्यम् जीवनं यच्छति। ______
(iv) 'इन्धनकाष्ठानि' बाहुल्येन समुपहरन्ति। ______
(v) वृक्षकर्तनात् संकटापन्नो जातः। ______
(vi) यन्त्रागाराणां विषाक्तं जलं नद्याम् पतन्ति। ______
(vii) पर्यावरणं धर्मस्य अंगं इति ऋषयः कथयन्ति। ______
(viii) शुद्धपर्यावरणं अस्मभ्यम् जीवनं यच्छति। ______
(ix) पञ्च प्रमुखानि तत्वानि सन्ति। ______
(x) वने ऋषयः वसन्ति स्म।

प्रश्न 3 पर्यायपदं चित्वा लिखत।

1 यतते	- अधुना	6 - कुक्षौ -	वर्षारहितः
2 परितः	- ऋषयः	7 - परिष्कृतम् -	स्वीकृतम्
3 प्राणवायुः	- प्रयत्नं करोति	8 - अपेयम् -	शुद्धम्
4 इदानीम्	- समन्तात्	9 - अवृष्टिः -	गर्भे
5 आर्षः	- आक्सीजनम्	10 - अंगीकृतम् -	पातुम् अयोग्यम्

प्रश्न 4. पदेषु विलोमपदानि मेलयत -